प्रदोष व्रत कथा PDF

स्कंद पुराण में वर्णित कथा के अनुसार एक विधवा ब्राह्मणी अपने पुत्र को लेकर भिक्षा मांगने के लिए जाती है वह प्रतिदिन सुबह भिक्षा मांगने के लिए जाती और शाम को वापस आती थी एक दिन जब वह शाम को भिक्षा मांग कर वापस आ रही थी तो उसे एक सुंदर बालक दिखाई दिया वह बालक विदर्भ देश का राजकुमार धर्मगुप्त था शत्रुओं में उसके पिता को मार दिया और उसकी माता की मृत्यु अकाल की वजह से हो गई उस ब्राह्मणी ने उस बालक को अपना लिया और उसे उसका पालन–पोषण करने लगी

कुछ समय के पश्चात वह ब्राह्मणी दोनों बच्चों के साथ देवयोग के रास्ते से देव मंदिर गई और वहां उसकी मुलाकात ऋषि शांडिल्य से हुई उन्होंने बताया कि उनके साथ जो एक बच्चा है वह विदर्भ देश के राजा का पुत्र है और उस बच्चे के पिता को शत्रु ने मार दिया और उनकी माता को ग्राह ने अपना शिकार बना लिया ऋषि शांडिल्य ने ब्राह्मणी को प्रदोष व्रत रखने की सलाह दी और ब्राह्मणी के साथ–साथ दोनों बच्चों ने भी प्रदोष व्रत रखना प्रारंभ कर दिया

pdfinbox.com

1 दिन दोनों बच्चे वन में घूम रहे थे तुम उन्हें वहां पर गंधर्व कन्याएँ नजर आई ब्राह्मण बच्चा तो वापस आ गया परंतु राजा का पुत्र उन कन्याओं के पीछे पीछे चल दिया और अंशुमती नाम की गंधर्व कन्या से बात करने लगा दोनों एक दूसरे पर मोहित हो गए गंधर्व कन्या (अंशुमती) ने विवाह के लिए राजकुमार के पुत्र को अपने घर बुलाया

दूसरे दिन जब दोबारा राजकुमार अंशुमती से मिलने आया तो अंशुमती ने अपन पिता को बताया कि यह विदर्भ देश के राजा का पुत्र है उसके बाद भगवान शिव की आज्ञा से गंधर्वराज ने अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार धर्मगुप्त के साथ किया और राजकुमार ने गंधर्व की सेना की सहायता से विदर्भ देश को फिर से जीत लिया यह सब ब्राह्मणी और राजकुमार धर्मगुप्त के प्रदोष व्रत के कारण ही संभव हो पाया स्कंद पुराण के अनुसार जो व्यक्ति सच्चे दिल से प्रदोष व्रत रखता है उसकी सभी मनोकामना पूरी होती है और उस पर असीम कृपा छाया बनी रहती है

pdfinbox.com